शॉमबुर्ग

वह शख्स जिसने एक किताबघर बनाया

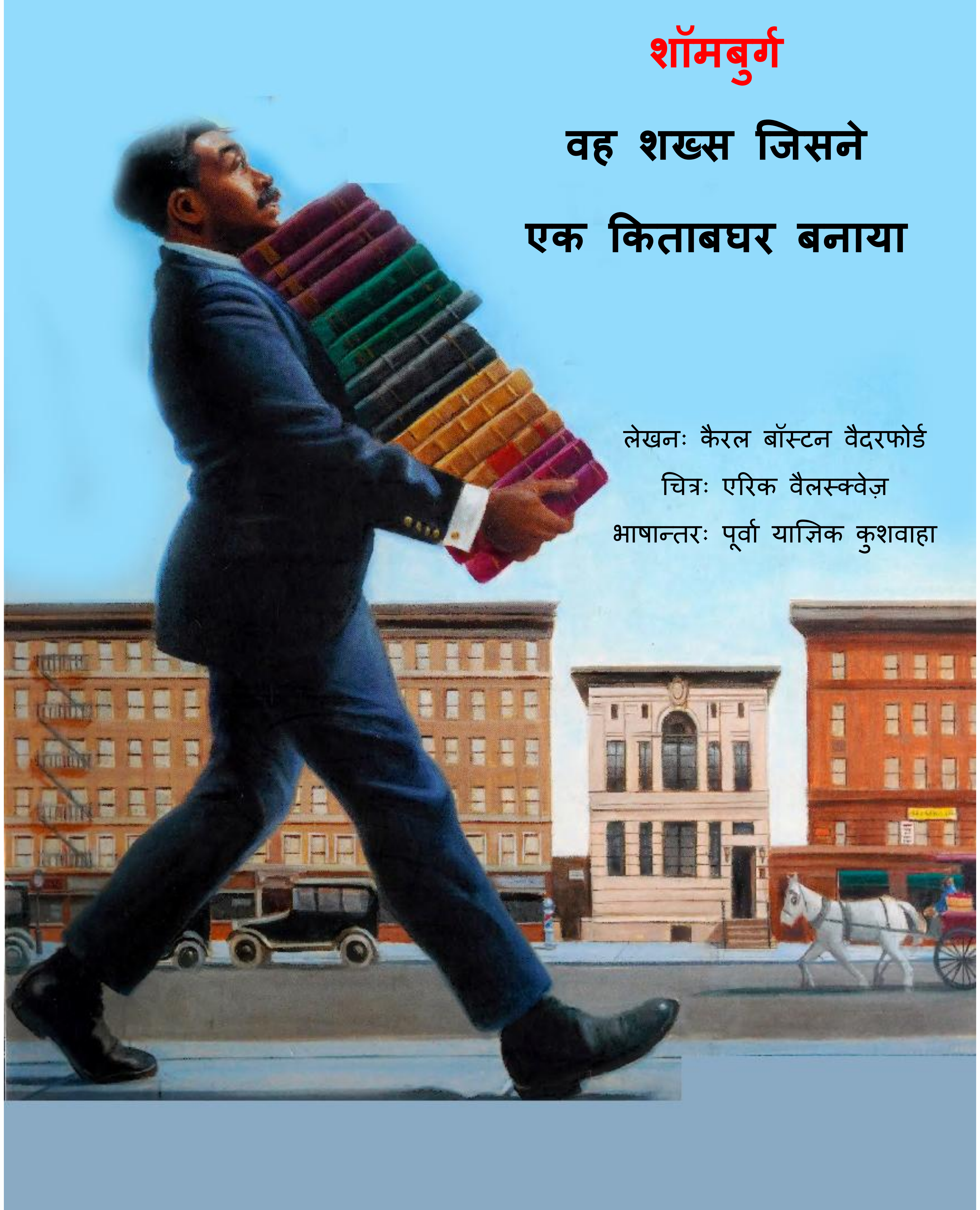

लेखनः कैरल बॉस्टन वैदरफोर्ड

चित्रः एरिक वैलस्क्वेज़

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

शॉमबुर्ग

वह शख्स जिसने एक किताबघर बनाया

लेखनः कैरल बॉस्टन वैदरफोर्ड

चित्रः एरिक वैलस्क्वेज़

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

जिज्ञासू बनो। दृढ़ बनो। गर्व करो।

जिज्ञासा आविष्कार का बीज है। आविष्कार प्रगति की जड़।

- सी.बी.डब्ल्यू

आर्थर अल्फांसो शॉमबुर्ग के लिए, शुक्रिया उस्ताद!

- ई.वी.

अमरीकी नीग्रो को अपना भविष्य बनाने के लिए अपने अतीत को गढ़ना होगा . . . इतिहास ही वह सब बहाल कर सकता है जिसे गुलामी ने छीन लिया है।

- आर्टूरो शॉमबुर्ग

आमुख

किताबों का शौकीन

आर्टूरा शॉमबुर्ग केवल एक पुस्तक प्रेमी से कहीं अधिक थे। वे बैंकर्स ट्रस्ट कम्पनी में डाक की छंटनी करने वाले उस क्लर्क से अधिक थे, जिनकी निगहबानी में गोरे काम करते थे। किसी काले इन्सान के लिए उन दिनों इतनी शक्ति पाना अनसुनी बात थी। आर्टूरो को काफी पहले यह समझ आ गया था कि इतिहास तब तक इतिहास के रूप में स्वीकारा नहीं जाता जब तक वह सभी कोणों से पूर्ण न हो। सो आर्टूरो ने किसी जासूस की तरह वे तमाम सुराग और तथ्य तलाशे, जो राष्ट्रों को गढ़ने और संस्कृतियों को रचने में अफ्रीकी मूल के लोगों की भूमिका की पुष्टि करते हों।

उनके साथी पुस्तक संग्रहकर्ता आर्थर स्पिनगार्न ने ग़ौर किया था कि आर्टूरो निरर्थक सामग्रियों के ढ़ेर में से बिना चूके एक-दो ऐसे ख़ज़ाने तो तलाश ही लेते थे, जिन पर शायद किसी दूसरे संग्रहकर्ता की नज़र पड़ती ही नहीं। आर्टूरो को विश्वास था कि जब एक बार तथ्य तलाश लिए जाएंगे वे ज्ञान के भवनों में स्पष्ट बोलेंगे और किसी काले बच्चे को यह कहने वाले शिक्षक को चुनौती देंगे, कि नीग्रो लोगों का कोई इतिहास नहीं है। शॉमबुर्ग ने छपे शब्दों, संगीत व कला के माध्यम से इस झूठ का बारंबार खंडन किया।

अपनी आजीवन खोज में वे केवल दुर्लभ किताबों का ही संग्रह नहीं करते रहे, बल्की उन्होंने भावी पीढ़ियों के लिए इतिहास का संशोधन भी किया। वे चाहते थे कि ये तथ्य समुदायों में तथा कक्षाओं में पढ़ रहे लड़कों व लड़कियों तक पहुँचें, ताकि वे यह सीख सकें कि काले लोगों की विरासत राष्ट्रीय सीमाओं को नहीं जानती। और आज हारलम स्थित सार्वजनिक किताबघर शॉमबुर्ग के नाम से जाना जाता है। इस किताबघर में एक करोड़ से अधिक पुस्तकें आदि हैं जो उस अतीत की शान को आलोकित करती हैं, जिनके अस्तित्व पर शॉमबुर्ग को पाँचवीं कक्षा से भरोसा था।

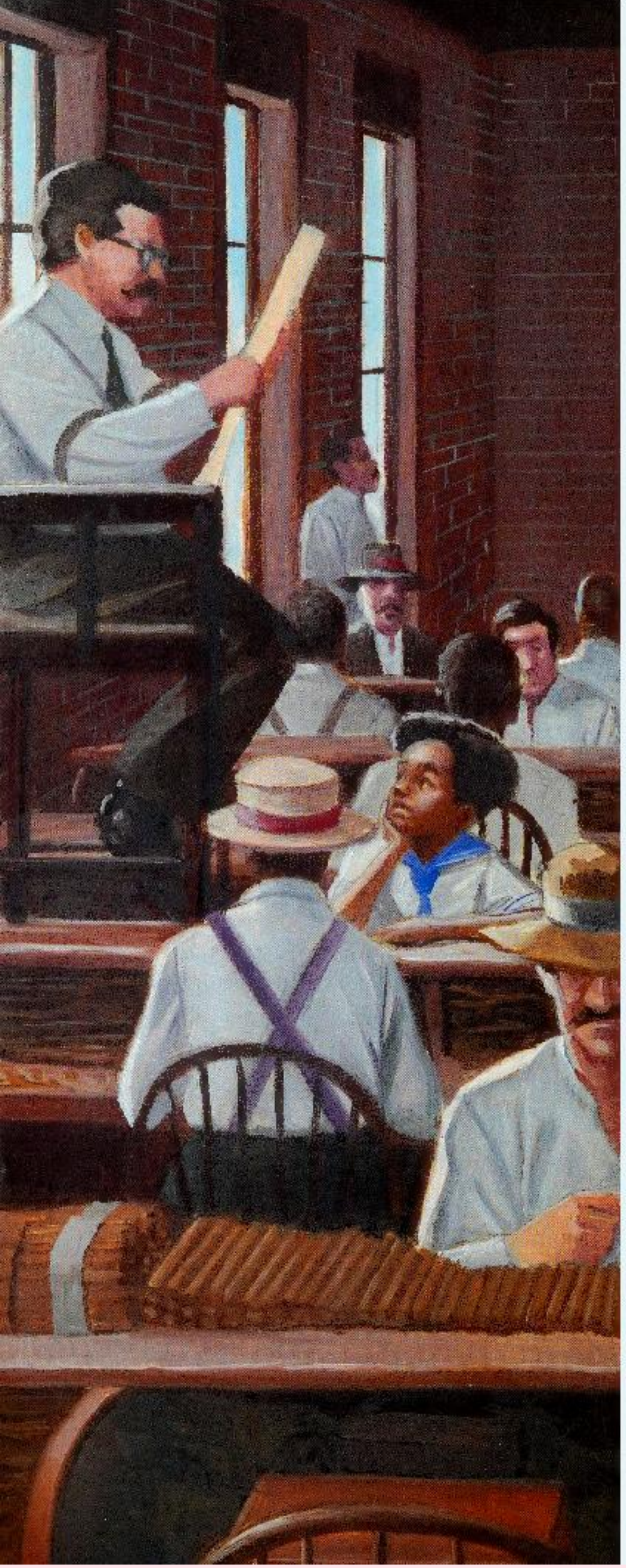

आर्टूरो शामबुर्ग हैरत के अहसास के साथ पैदा हुए थे। पुएर्तो रीको में अपने लड़कपन में वे 'तबाक्वेरोस्' यानी सिगार बनाने वालों से उनका धंधा सीखने की कोशिश करते थे।

वे लोग आपस में चन्दा जमा कर अपने कारखाने में किसी 'एल लैक्तोर' यानी पढ़ने वाले को बुलाते थे जो उन्हें अख़बार, उपन्यास, राजनीतिक भाषण और लेख आदि पढ़ कर सुनाया करता था। छोटा आर्टूरो संसाधित तम्बाकू की गंध और पाठक की आवाज़ को मानो सोख लेता था। इसी तरीके से आर्टूरो ने न केवल आखर सीखे बल्की उसे लिखित शब्दों से प्यार भी हो गया।

सो, जब पाँचवीं कक्षा में उसकी शिक्षका ने कहा कि अफ्रीका के बेटे-बेटियों का कोई इतिहास ही नहीं है, कि उनके बखाने जाने वाले कोई नायक नहीं हैं, तो क्या आर्टूरो की आँखों की चमक क्या बुझ गई? क्या नन्हे आर्टूरो ने अपने कंधे झुकाए और अपनी आँखें क्षितिज के बजाए धरती पर गड़ा दीं?

नहीं! उसने सोचा कि उसके लोगों ने ज़रूर पिछली शताब्दियों में कुछ योगदान किया होगा। पर उस इतिहास को शिक्षक पढ़ाते नहीं थे। जब तक वे ऐसा नहीं करते, आर्टूरो जैसे स्कूली बच्चे अपनी विरासत के बारे में सीख ही कैसे सकते हैं। उनका यह अज्ञान उन्हें जंज़ीरों में जकड़े रहेगा।

उस शिक्षका द्वारा उसके लोगों को इस तरह खारिज करने पर क्या आर्टूरो की चमक अंधेरे में बुझाई गई मोमबत्ती की तरह बुझ गई?

कतई नहीं! वह चमक कभी गई नहीं। वह एक चिन्गारी में बदल गई!

प्रतिभावान

हमारे इतिहासकार कहाँ है जो हमारा पक्ष रखें? आर्टूरो ने पूछा, जो हमारे लोगों को हमारा इतिहास बताएं/पढ़ाएं?

एफ्रो पोएर्तोरीकी/एफ्रोबोरिक्वेन्यो में 1874 में जन्मे आर्टूरो शॉमबुर्ग ने तब से एक आजीवन जारी रही खोज आरंभ की। उन्होंने लड़कपन में ही एक इतिहासकार का जामा ओढ़ लिया। इसलिए क्योंकि वे जानना चाहते थे, उन्हें सच्चाई जाननी थी। इतिहास क्लब (इतिहास में रुचि रखने वालों को समूह) में उन्होंने ग़ौर किया कि गोरे किशोर अपनी विरासत पर काले सदस्यों के बनिस्बत ज़्यादा फक्र करते थे। आर्टूरो ने काले लोगों के बारे में जो कुछ मिला वह सब पढ़ा। पर उसने जल्दबाज़ी नहीं की। उसने तथ्यों को मन में खदबदाने दिया। वास्तविक पांडित्य में समय व शान्त प्रयासों की दरकार होती है। जल्दबाज़ी में कुछ भी सार्थक किया ही नहीं जा सकता। आख़िरकार इतिहास युगों का सफ़र जो था।

किताबों को घंटो तक खंगालने वाला आर्टूरो, तब बैंजमिन बैनेकर के अमरीका के आरंभिक पंचांग (एल्मनैक) तक पहुँचा।

आर्टूरो ने इस स्व-शिक्षित आविष्कारक, खगोलविद् तथा नक्शानवीस के बारे में सब कुछ पढ़ा। जब उसने पढ़ा कि बैनेकर ने सूर्यग्रहण की सही तिथी बताई थी, वह मुस्कराया। आर्टूरो उनकी हाथों से बनाई घड़ी की टिक-टिक मन में सुन सकता था, जो नई दुनिया में बनी पहली घड़ी थी। आर्टूरो कल्पना करता कि दौड़ते जा रहे समय का पीछा करते हुए बैनेकर ने अपनी याद्दाश्त से वॉशिंगटन डी.सी. की सड़कों को तब नया आकार दिया, जब फ्रांसीसी वास्तुकार पिएर ला फों परियोजना को बीच में ही छोड़ गए। और तो और वे उसके सारे नक्शे भी अपने साथ लेते गए। बैनेकर को इन नक्शों को फिर से बनाने में सिर्फ दो दिन लगे। सब कुछ मानो उनके ज़हन में बस गया था।

टिक-टॉक, टिक-टॉक

इस विलक्षण प्रतिभा का स्मारक भला कहाँ था?

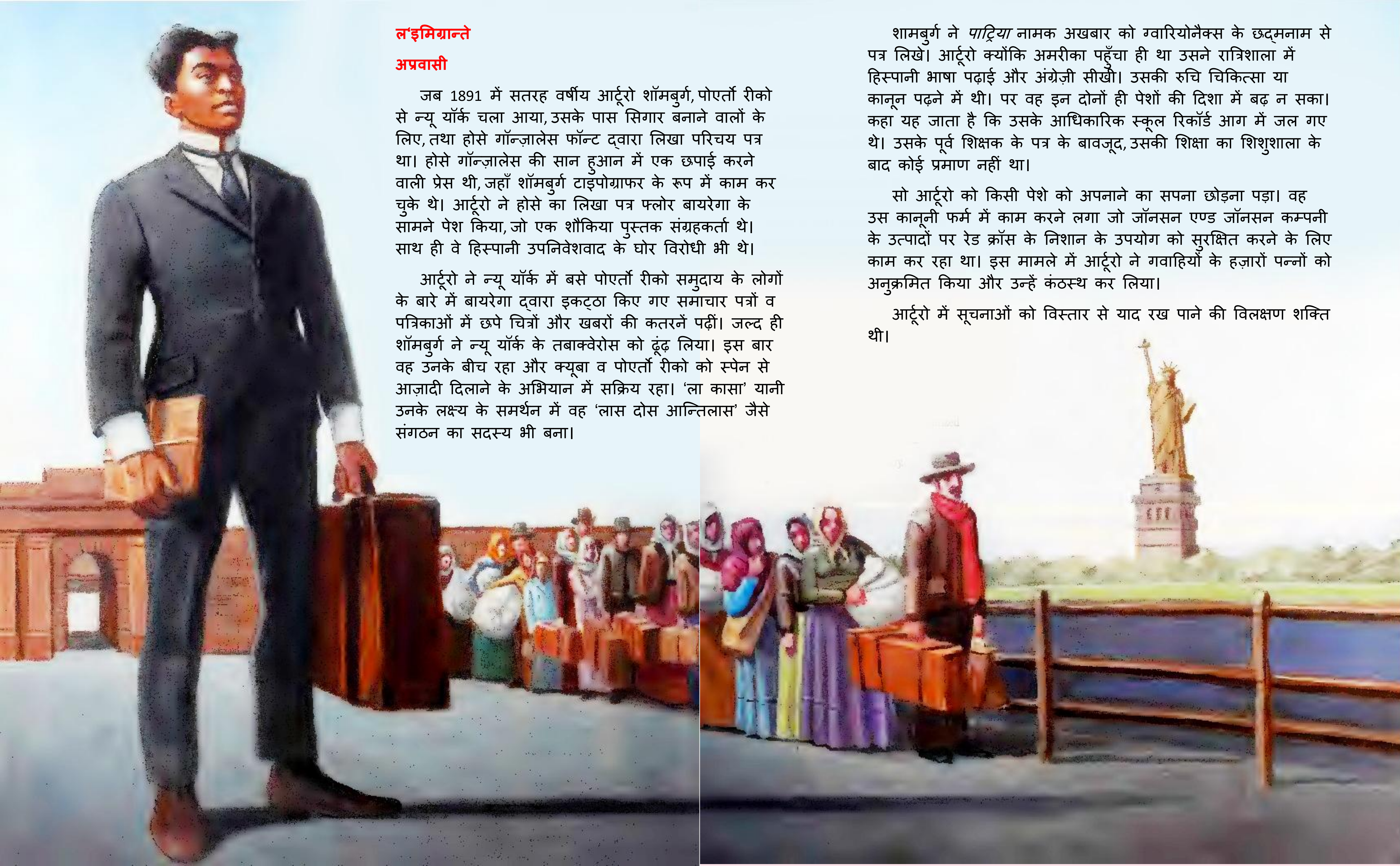

ल'इमिग्रान्ते

अप्रवासी

जब 1891 में सतरह वर्षीय आर्टूरो शॉमबुर्ग, पोएर्तो रीको से न्यू यॉर्क चला आया, उसके पास सिगार बनाने वालों के लिए, तथा होसे गॉन्ज़ालेस फॉन्ट द्वारा लिखा परिचय पत्र था। होसे गॉन्ज़ालेस की सान हुआन में एक छपाई करने वाली प्रेस थी, जहाँ शॉमबुर्ग टाइपोग्राफर के रूप में काम कर चुके थे। आर्टूरो ने होसे का लिखा पत्र फ्लोर बायरेगा के सामने पेश किया, जो एक शौकिया पुस्तक संग्रहकर्ता थे। साथ ही वे हिस्पानी उपनिवेशवाद के घोर विरोधी भी थे।

आर्टूरो ने न्यू यॉर्क में बसे पोएर्तो रीको समुदाय के लोगों के बारे में बायरेगा द्वारा इकट्ठा किए गए समाचार पत्रों व पत्रिकाओं में छपे चित्रों और खबरों की कतरनें पढ़ीं। जल्द ही शॉमबुर्ग ने न्यू यॉर्क के तबाक्वेरोस को ढूंढ़ लिया। इस बार वह उनके बीच रहा और क्यूबा व पोएर्तो रीको को स्पेन से आज़ादी दिलाने के अभियान में सक्रिय रहा। 'ला कासा' यानी उनके लक्ष्य के समर्थन में वह 'लास दोस आन्तिलास' जैसे संगठन का सदस्य भी बना।

शामबुर्ग ने *पाट्रिया* नामक अखबार को ग्वारियोनैक्स के छद्मनाम से पत्र लिखे। आर्टूरो क्योंकि अमरीका पहुँचा ही था उसने रात्रिशाला में हिस्पानी भाषा पढ़ाई और अंग्रेज़ी सीखी। उसकी रुचि चिकित्सा या कानून पढ़ने में थी। पर वह इन दोनों ही पेशों की दिशा में बढ़ न सका। कहा यह जाता है कि उसके आधिकारिक स्कूल रिकॉर्ड आग में जल गए थे। उसके पूर्व शिक्षक के पत्र के बावजूद, उसकी शिक्षा का शिशुशाला के बाद कोई प्रमाण नहीं था।

सो आर्टूरो को किसी पेशे को अपनाने का सपना छोड़ना पड़ा। वह उस कानूनी फर्म में काम करने लगा जो जॉनसन एण्ड जॉनसन कम्पनी के उत्पादों पर रेड क्रॉस के निशान के उपयोग को सुरक्षित करने के लिए काम कर रहा था। इस मामले में आर्टूरो ने गवाहियों के हज़ारों पन्नों को अनुक्रमित किया और उन्हें कंठस्थ कर लिया।

आर्टूरो में सूचनाओं को विस्तार से याद रख पाने की विलक्षण शक्ति थी।

कीड़ा किताबें तलाशने का

मैं यह जानना चाहता था, आर्टूरो ने बाद में कहा *कि, मेरे नस्ल के समूहों ने क्या योगदान दिया था?*

शॉमबुर्ग को हमेशा लगता था कि किताबें काफ़ी नहीं हैं। अफ्रीका के बारे में उसकी जिज्ञासा कभी संतुष्ट नहीं होती थी। आर्टूरो ख़ुद कहते थे कि उन्हें *किताबें तलाशने की बीमारी है*। कोई भी अकेली किताब पूरी कहानी नहीं सुनाती थी, और ऐसा कोई किताबघर नहीं था जो इस विषय की विशेषज्ञता रखता हो।

सो आर्टूरो दुर्लभ पुस्तकों की दुकानों को खंगालने लगे। वहाँ वे फटेहाल पर्चे (पैम्फलैट), फटी ज़िल्दों वाली किताबें, पुरानी चमड़े की ज़िल्द वाली किताबें, दीमक लगी पुरानी किताबें, देखते। शुरुआत में आर्टूरो ने जो किताबें आदि ख़रीदीं वे सस्ती थीं। इसलिए, क्योंकि पुस्तकों का संग्रह करने वाले गोरे उन्हें महज कबाड़ मानते थे।

फिर भी वे जो तलाश लेते थे उसे आसानी से तलाश पाना मुश्किल था। पर आर्टूरो किताबों को तलाशने के कुछ संकेत जानते थे। और उनके सहारे आर्टूरो के हाथ कभी-कभार कुछ उम्दा किताबें भी लग जाती थीं।

फिलिस व्हीटली में आर्टूरो को पहली अफ्रीकी-अमरीकी और तीसरी अमरीकी स्त्री मिली जिसकी कविताएं प्रकाशित हो सकी थीं। उनकी कविताओं में आर्टूरो को न केवल ईश्वर तथा देश के प्रति समर्पण का भाव मिला, बल्की एक ऐसी जीवनी भी जो उतनी ही विलक्षण थी जितना उनका काव्य। सात वर्ष की उम्र में पश्चिमी अफ्रीका से धर-पकड़े जाने के बाद उन्हें फिलिस का नाम दिया गया। एक गुलामों के जहाज़ में नन्ही फिलिस को माल की तरह लाया गया और उसे जीन व्हिटनी को बेच दिया गया। पर हमेशा बीमार रहने वाली फिलिस को व्हिटनी की पत्नी की सेविका के रूप में प्रशिक्षित नहीं किया गया। ख़राब स्वास्थ्य पर दुर्लभ प्रतिभा की धनी फिलिस जल्द ही अंग्रेज़ी भाषा में दक्ष हो गई। उसने बाइबल पढ़ी, धर्म और अंग्रेज़ी की उत्कृष्ट रचनाओं का अध्ययन किया। वह कई भाषाओं में धाराप्रवाह बोल सकती थीं।

फिलिस एक कवि के रूप में अभूतपूर्व थीं। अगर आर्टूरो समुद्री पक्षी होते तो वे अटलांटिक की लहरों को तब पार कर सकते थे जब फिलिस ने दूसरी बार, लंदन जाने के लिए अटलांटिक को पार किया था। फिलिस अपनी पुस्तक *पोयम्स् ऑन वेरियस सब्जेक्टस, रीलिजियस एण्ड मॉरल* का प्रचार करने वहाँ गई थीं। काश आर्टूरो फिलिस को आज़ाद करने के ऐलान पर दस्तख़त होते देख सकते। काश वे फिलिस को अमरीकी क्रान्ति के समय जॉर्ज वाशिंगटन की प्रशंसा में कविता लिखते देख पाते। हालांकि फिलिस ने अपनी दूसरी किताब बेचने की पेशकश की, उनकी अंतिम पाण्डुलिपि प्रकाशित नहीं हुई, न ही उसकी प्रति प्राप्त हुई। *काश,* आर्टूरो ने सोचा, *मैं उसे ढूंढ़ पाता!*

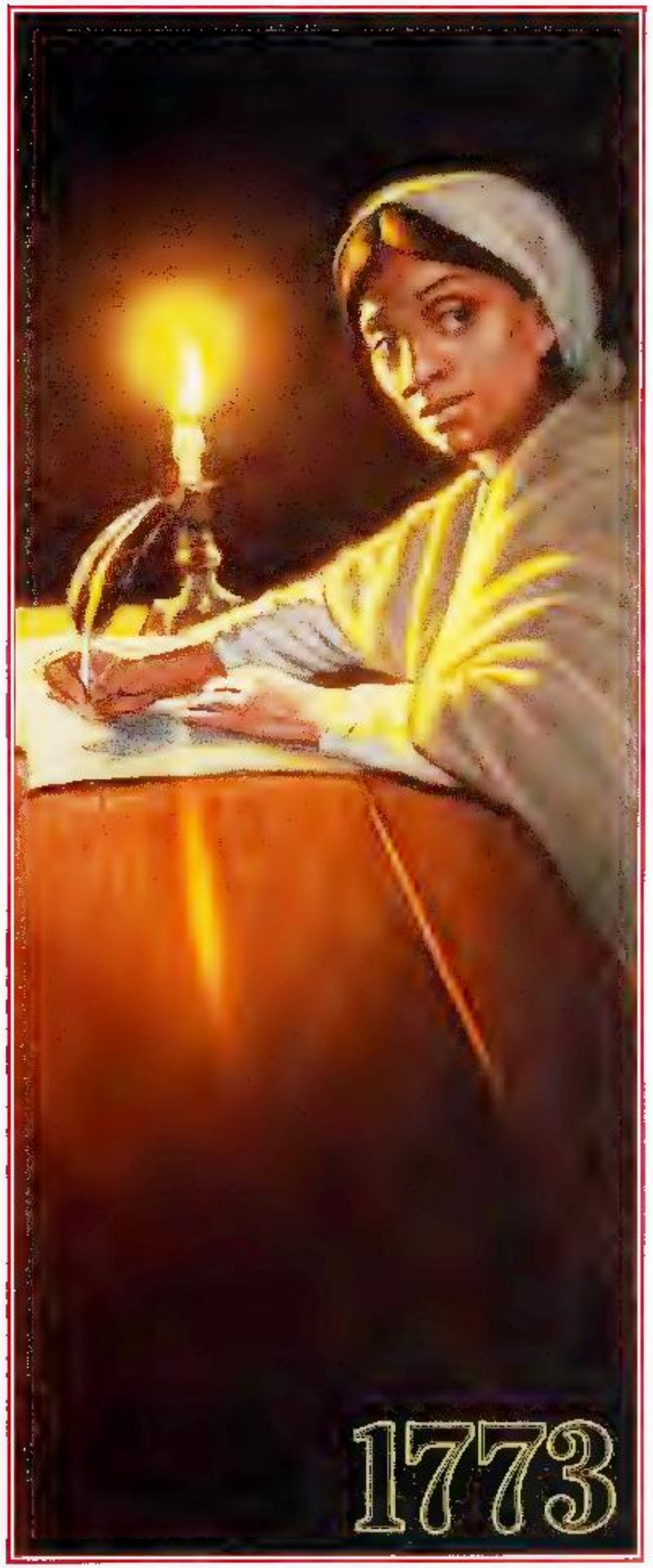

फ्रैडरिक डगलस

जब आर्टूरो, फ्रैडरिक डगलस के वर्णन को उलट-पलट रहे थे, हवा का एक झोंका मानो उन्हें नदी किनारे बने उस प्लान्टेशन (खेत) की ओर ले गया जहाँ पालों वाले एक जहाज़ ने फ्रैडरिक के लिए आज़ादी को परिभाषित किया। आर्टूरो को भी फ्रैडरिक की तरह लिखित शब्दों से प्यार था। सो फ्रैडरिक ने उस कानून को तोड़ा जो गुलामों के पढ़ना-लिखना सीखने पर पाबन्दी लगाता था। जिस रास्ते फ्रैडरिक गुलामी से बच भागे थे, आर्टूरो ने मेरीलैण्ड से मैसाच्युसेटस् तक उनके पदचिन्हों का पीछा किया।

और जब फ्रैडरिक गुलामी के विरोध में दहाड़े, उनके *भाषण आन्दोलन करो! अन्दोलन करो! करो आन्दोलन!* से आर्टूरो कलम की ताकत के प्रति सजग हुए। इस लक्ष्य के साथ डगलस ने गुलामी उन्मूलन के प्रयासों को मज़बूती दी थी और लोगों ने ज़ोरदार तालियों के साथ उनका समर्थन किया था। आर्टूरो ने डगलस के गुलामी विरोधी अख़बार *द नॉर्थ स्टार* को देखा। उस प्रकाशन का मूल मंत्र उन्हें खरा लगा - अधिकार का कोई लिंग नहीं होता - सत्य का कोई रंग नहीं होता! ईश्वर हम सबका पिता है और सभी इन्सान भाई-भाई हैं।

दस हज़ार किताबें भी लोकतंत्र की इससे बेहतर परिभाषा नहीं कर सकती थीं। किशोरावस्था में एक छपाईकर्मी के सहायक रह चुके आर्टूरो ने, अपनी कल्पना में डगलस को धातु के अक्षर जमाते और अपनी छापा मशीन को चलाते देखा। लम्बे कद, गहरी धंसी आँखों व ऊन से बालों की दाढ़ी वाले डगलस आगे चलकर हाइती में संयुक्त राज्य के मंत्री के पद पर नियुक्त हुए। अपने बाद के वर्षों में उन्होंने संडर हिल्स को ख़रीदा, जो वॉशिंगटन के एनाकोस्टिया हिस्से में था। लोग वहाँ उन्हें सन्त मानते थे। आर्टूरो को लगा कि डगलस का नाम सभी लेखागारों में होना चाहिए। डगलस के लिखे शब्द उनकी स्मृति को हमेशा बनाए रखेंगे।

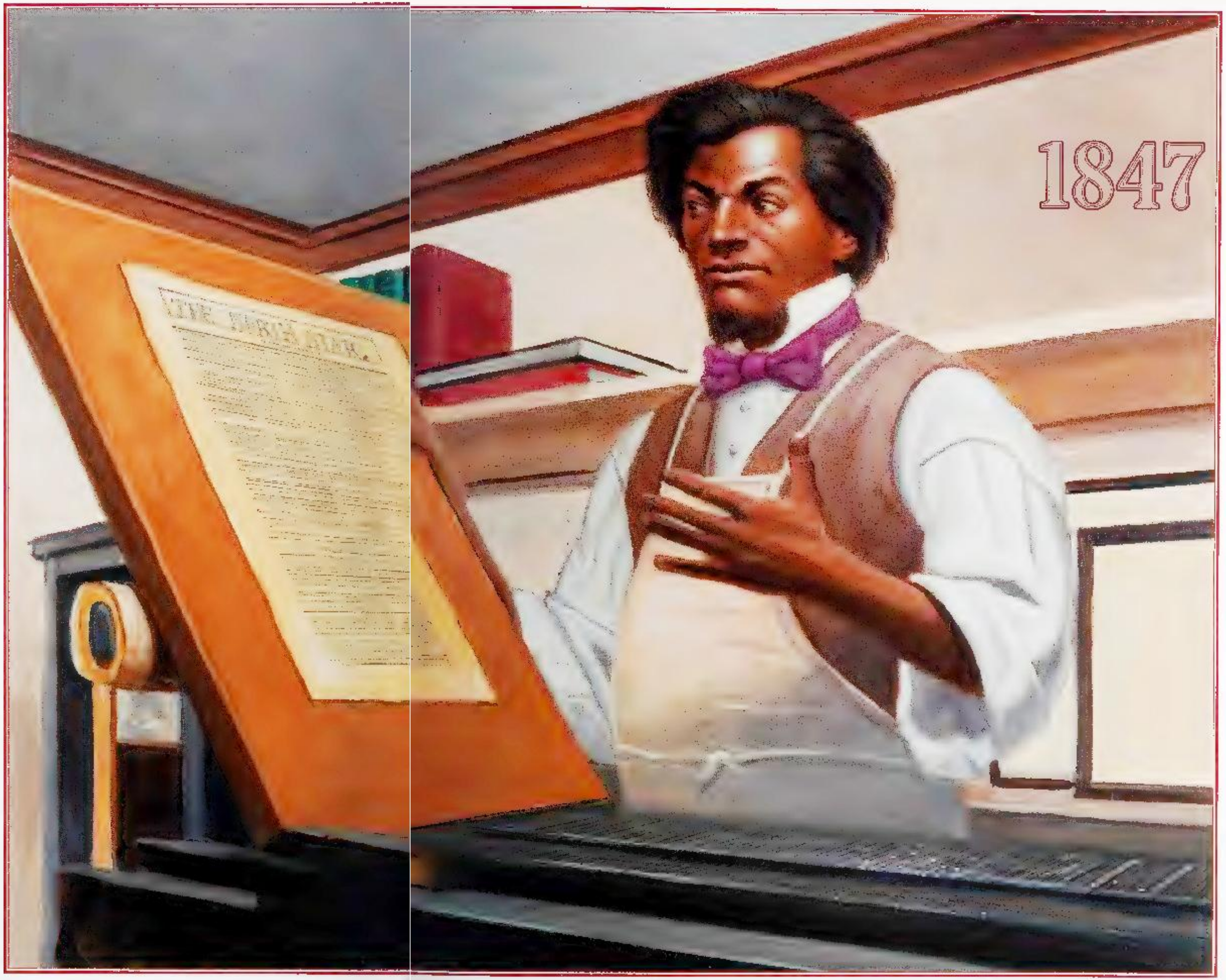

क्रान्तिकारी 1804

शॉमबुर्ग की तलाश जारी रही, उन्होंने न केवल किताबें ख़रीदीं बल्की कलाकृतियाँ, पत्र, प्रिंट्स, दुर्लभ अफ्रीकी उत्कीर्ण रत्न भी ख़रीदे। वे अज्ञानता के ख़िलाफ लड़ना चाहते थे और झूठों का पर्दाफ़ाश करना चाहते थे। इस युद्ध के लिए उन्हें अस्त्र-शस्त्र चाहिए थे।

आर्टूरो ने अतीत से उदाहरणों की फौज खड़ी की।

उनके लड़कपन का हीरो था टुसां लूवर्ट्यूर, जिसने हाइती के गुलामों को छुड़ाने के विद्रोह का नेतृत्व किया था। आर्टूरो ने बाद में वे आदेश ख़रीदे जिन पर लूवर्ट्यूर के दस्तख़त थे। टुसां स्वयं भी एक आज़ाद किए गए गुलाम थे, जिनके पास पैसा और सम्पत्ति थी। पर इस सब को जोखिम में डाल वे गुलाम विद्रोह से जुड़े। अमरीकी स्वतंत्रता के महज एक पीढ़ी बाद उन्होंने उस विद्रोह का नेतृत्व किया जो बारह वर्षों तक चला। जिसमें हज़ारों जानें गईं। उनकी सेना पहले फ्रांसीसियों, तब ब्रिटिशरों और अंततः हिस्पानियों से लड़ी। तब जाकर विजय संभव हुई और एक गणतंत्र जन्मा: हाइती!

जो उपनिवेश और देश गुलामी के आधार पर बने थे, उनके लिए हाइती की क्रान्ति एक झंझावात के समान थी। लूवर्ट्यूर के नाम की फुसफुसाहट तक गुलामों के मालिकों को थर्रा देती थी।

लोक धारणा के विपरीत गुलाम खुद भी गुलामी के विरोध में उठे - सिर्फ हाइती में ही नहीं। आर्टूरो विद्रोह की जड़ों को आरंभिक अमरीका में भी तलाश सके। उन्होंने डेविड वॉकर का 1829 में लिखा, उग्र सुधारवादी पर्चा पढ़ा। डेविड एक आज़ाद किए गए काले व्यापारी थे। उनके पर्चे का शीर्षक थाः *एन अपील टू द कलर्ड सिटिज़न्स ऑफ द वर्ल्ड,* जिसमें उन्होंने गुलामों से उठ खड़े होने की अपील की थी। यह उग्र संदेश था, जिसे उनके समय में प्रतिबन्धित किया गया।

आर्टूरो ने 1839 में एमिस्टैड नामक गलामों को ढ़ोने वाले जहाज़ में हुई बगावत और अदालत में चले उसके मुकदमे का अध्ययन किया। कई राज्यों ने इस घटना के बाद गुलामी विरोधी साहित्य पर प्रतिबंध लगाया, और गुलामों के पढ़ना-लिखना सीखने पर पाबन्दी लगा दी।

गुलामों के मालिक आख़िर डरते किससे थे?

दक्षिण कैरोलाइना तथा वर्जीनिया में डेनमार्क वैसी तथा गेब्रिएल प्रॉसर ने विद्रोह की योजना बनाई। वर्जीनिया में मैट टर्नर ने अपने सपने को साकार किया। टर्नर ने 1831 के विद्रोह में सत्तर कालों को, जिनमें गुलाम और आज़ाद दोनों ही शामिल थे, एकजुट किया तथा सत्तावन गोरों को मार गिराया।

आर्टूरो ने अपने नायकों के बहादुरी से भरे शब्द पढ़े।

इस दृष्टि से देखें तो शॉमबुर्ग भी एक क्रान्तिकारी थे।

तीन एलिज़ाबैथ

आर्टूरो ने 1895 में पहली बार विवाह किया। उसी वर्ष उन्होंने अपने नाम का अंग्रेज़ी रूप आर्थर को अपनाया। स्टाउटन, वर्जीनिया की एलिज़ाबैथ हैचर उनकी पहली पत्नी थीं। उनकी मृत्यु कम उम्र में हुई और वे अपने दो बच्चों - मैक्सिमो गामेज़ और किंग्सले गुआरिआनैक्स - को बड़ा करने की ज़िम्मेदारी आर्थर पर छोड़ गईं। उनकी तीसरी सन्तान - आर्टूरो अल्फ़ान्सो, जूनियर, की मौत शैशवास्था में ही हो गई थी।

उनकी दूसरी पत्नी एलिज़ाबैथ मौरो टायलर भी वर्जीनिया से थीं। इस विवाह से उनके दो बच्चे हुए - रेगिनाल्ड स्टैनफील्ड और नैथैनियल होसे। दोनों लड़के वर्जीनिया में अपने सौतेले भाइयों और अपनी नानी के साथ रहे। उस ज़माने में यह आम चलन था कि शहरों में काम करने वाले माता-पिता अपने बच्चों का पालन-पोषण अपने रिश्तेदारों के जिम्मे कर देते थे। अपने बच्चों से मिलने दक्षिण जाने पर कालों की अलग कतारों में खड़े होने पर बाध्य हो शॉमबुर्ग नाराज़ हुआ करते थे।

जब दूसरी एलिज़ाबैथ की मृत्यु हो गई, आर्टूरो ने एक और एलिज़ाबैथ, एलिज़ाबैथ ग्रीन से विवाह किया। इस विवाह से उनके तीन बच्चे हुए - फर्नेन्डो, डोलोरस मारी और प्लाथीडो कार्लोस। उनके हिस्पानी नामों के बावजूद शॉमबुर्ग ने अपने बच्चों को अपनी मातृभाषा नहीं सीखने दी।

लीपापोती

कालों के वैभव की तलाश में शॉमबुर्ग को उन तमाम मिथ्या सूचनाओं से गुज़रना पड़ा जो अफ्रीकियों की मानवता छीन, उन पर कमतर होने का ठप्पा लगाती थीं, ताकि गलामी को जायज़ ठहराया जा सके। यह पूरा विचार चमड़ी के रंग के आधार पर लोगों को श्रेष्ठ या कमतर करार देता था। अभिजात वर्ग का तर्क यह था कि उनके लिए निजी संपत्ति व साम्राज्य गढ़ना ज़रूरी था।

आर्टूरो को इस धारणा में साज़िश की बू आती थी। इसी धारणा के चलते अफ्रीकी लोगों के इतिहास में गुलामी के सिवा सब कुछ मिटा दिया गया था। आर्टूरो ग़ौर किया कि ऐतिहासिक रिकार्ड केवल तब रंग के प्रति अन्धा होता है, जब वह लालची इरादों के हित में काम करता हो। पर शॉमबुर्ग ने सत्य का पीछा किया और उन तमाम साक्ष्यों को ढूंढ निकाला जिन पर लापापोती कर दी गई थी।

आर्टूरो को अफ्रीकी जड़ें, कलाकार, पक्षी-विज्ञानी तथा प्रकृतिविद जेम्स ऑडुबौन के वंश-वृक्ष में मिलीं। ऑडुबौन की सबसे श्रेष्ठ रचना थी उनकी पुस्तक *बर्ड्स् ऑफ अमेरिका* । उन्होंने जल रंगों, मोम से बने रंगों, कोयला व पेन्सिलों की मदद से उत्तरी अमरीका के पक्षियों को अद्भुत तरीके से प्रस्तुत किया था। परन्तु ऑडुबौन के मशहूर हो जाने के बावजूद इस बात का बिरले ही उल्लेख किया जाता था कि वे एक फ्रांसीसी प्लान्टेशन मालिक और उनकी घरेलू क्रिओल (मिश्रित नस्ल का व्यक्ति) सहायिका के पुत्र थे।

आर्टूरो ने लड़कपन में *थ्री मस्केटियर्स* पढ़ी थी। उन्होंने बाद में लिखा था कि मैं उस किताब में खो जाया करता था। और सोचता था कि *मैं एथॉस, पोरथॉस और आरामिस के साथ लड़ रहा हूँ।* आर्टूरो ने उनके आदर्श वाक्य को रट लिया था - सभी एक के लिए और एक सभी के लिए। पर उन्हें पुस्तक के लेखक एलैक्ज़ैण्डर द्युमास् के बारे में यह पता नहीं था कि उनके पूर्वज गुलाम थे।

यह आर्टूरो को बचपन में क्यों नहीं बताया/सिखाया गया था?

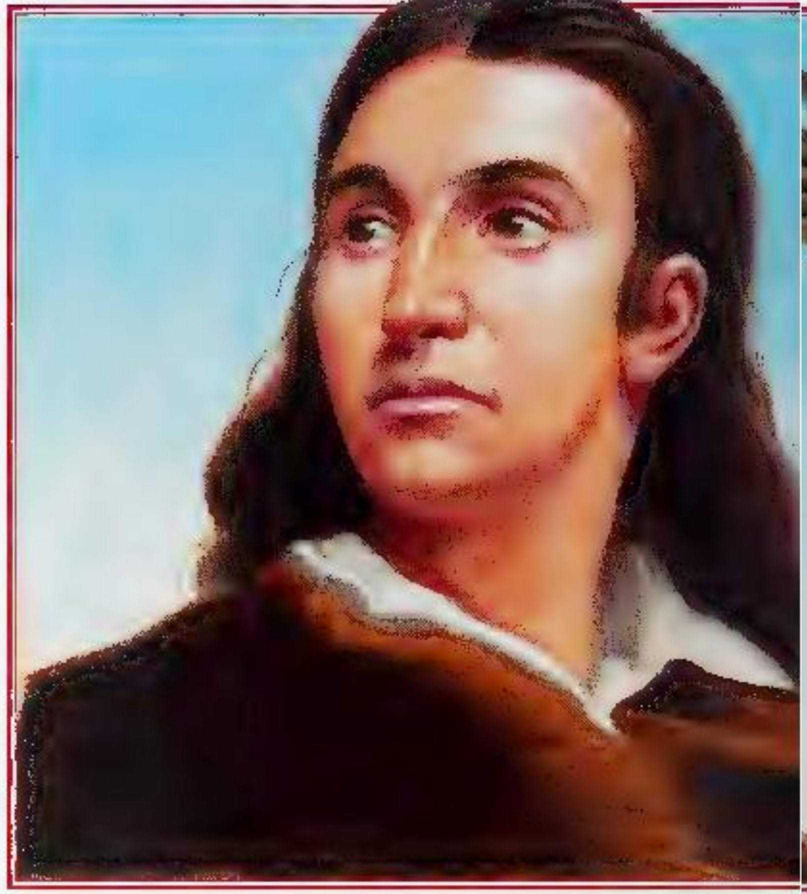

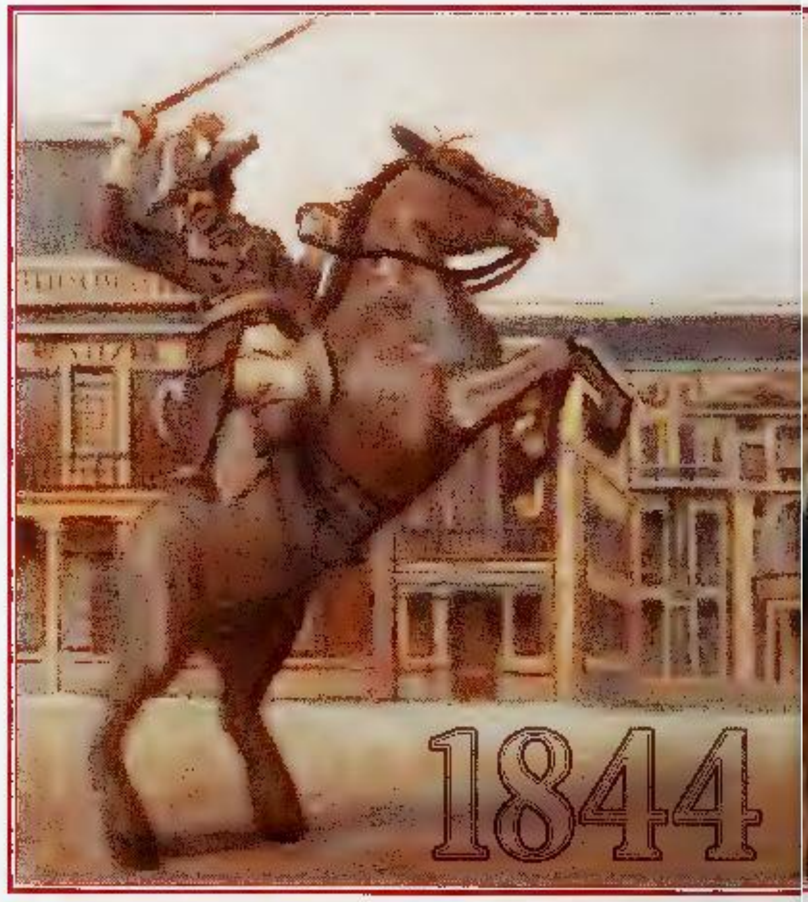

आर्टूरो ने पाया कि रूस का भी एक काला नायक (हीरो) था, महा कवि एलैक्जैण्डर पुश्किन, आधुनिक रूसी साहित्य के पिता। उनकी पहली रचना तब प्रकाशित हुई जब वे महज पंद्रह वर्ष के थे। उनके पर-दादा अब्राहम गैनिबल थे, जिन्हें बचपन में केन्द्रीय अफ्रीका से अगुवा कर लिया गया था। वे पीटर महान के दरबार में सेवादार थे। पर बड़े होकर वे सेना के जनरल और सामन्त बने। कोई अचरज नहीं कि पुश्किन भी द्वन्द्व युद्ध लड़ने के लिए मशहूर हुए।

जर्मनी के संगीतकार लुडविग फॉन बीथोवन का भी अफ्रीका से संबंध था। उनका वर्णन करते समय उन्हें अक्सर गहरे रंगवाला मुलैटो (गोरे-काले की सन्तान) या फिर मूर (उत्तरी अफ्रीका का अरब) कहा जाता था। बीथोवन अकल्पनीय रूप से प्रतिभाशाली थे, और तब भी संगीत रचते रहे जब वे बहरे हो गए थे। संगीत के इस विलक्षण उस्ताद की अफ्रीकी विरासत को किस तरह दबा दिया गया था।

आर्टूरो बीथोवन की पाँचवीं सिम्फनी सुनते समय अफ्रीकी ढ़ोलों को सुना करते थे।

नाविक विद्या

आर्टूरो शॉमबुर्ग खासे संग्रहकर्ता बन चले थे। उन्हें पॉल कफी के बारे में दो खण्ड प्राप्त किए जो आरंभिक अमरीकी व्हेल मछली के शिकारी, जहाज़ निर्माता और समुद्री व्यापारी थे। उनके जहाज़ों का बेड़ा अमरीका के अटलांटिक तट से कैरेबियन द्वीपों तथा युरोप तक जाया करता था।

उनके बनाए जहाज़ों में कफी और उनके कार्मिक अटलांटिक महासागर में व्हेल मछली का शिकार किया करते थे। यह गन्दा और ख़तरनाक काम था, पर फिर भी ज़रूरी था। पहले हार्पून से व्हेल का शिकार किया जाता, तब उसकी चरबी की परतों को तेल में बदला जाता था, ताकि बढ़ रहे शहरों में बत्तियाँ जल सकें।

पॉल कफी बेहद अमीर कालों में एक थे। वे अपनी बात खुल कर कह सकते थे। कफी ने एक याचिका लिखी कि आज़ाद कालों को मत देने का अधिकार होना चाहिए, क्योंकि वे भी कर देते हैं। वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने अफ्रीका वापसी के विचार पेश किया था।

वे सोचते थे कि आज़ाद किए गए काले गुलाम किसी दिन सिएरा लिओन में जा बसेंगे। कफी स्वयं वहाँ गए और पश्चिमी अफ्रीका में कदम रखा ताकि यह अन्दाज़ लगा सकें कि उनका नया समाज वहाँ जड़ें जमा सकेगा या नहीं। उन्होंने व्हाइट हाउस को रिपोर्ट भेजी कि हर वर्ष एक जहाज़ भर आज़ाद किए गए गुलामों को वहाँ भेजना संभव है।

आर्टूरो को कफी में मार्कस् गार्वी का पूर्वज दिखा, जो हारलम पुनर्जागरण के नेता थे। गार्वी कालों के गर्व, स्वयं सहायता और एक शताब्दी पहले कफी की तरह अफ्रीका लौटने की हिमायत करते थे। 1920 में आर्टूरो ने गार्वी, उनके अख़बार *नीग्रो वर्ल्ड* तथा उनके *ब्लैक स्टार* नामक भाप से चलने वाले जहाज़ों के बेडे को सहयोग दिया।

जब गार्वीआइटों ने हारलम की 125वीं स्ट्रीट पर जुलूस निकाला, जिसमें वे पंखों से सजे टोपों, फुंदनों व ताम्बे के बटनों से सजे गणवेश में चल रहे थे, तो क्या आर्टूरो के दिमाग में कफी की यात्राओं का ख़याल नहीं आया होगा?

खोजी कुत्ता

हालांकि आर्टूरो दिन के समय बैंक के डाक कक्ष के क्लर्क थे उनका एलन लॉक के साथ मेल-जोल था, जो हारलम पुनर्जागरण के पिता कहलाते थे। वे बुकर टी. वॉशिंगटन, जिन्होंने टस्केजी संस्था की स्थापना की थी और डब्ल्यू. ई. बी. दुबॉइस, जो अटलान्टा विश्वविद्यालय के प्रोफेसर थे, तथा हार्वर्ड से डॉक्टरेट की उपाधि पाने वाले पहले अश्वेत व्यक्ति भी, के साथ पत्राचार करते थे। इन दोनों विद्वानों में इस बात पर मतभेद था कि सामाजिक या आर्थिक प्रगति में से किस पर ज़ोर दिया जाना चाहिए। पर वे इस बात पर सहमत थे कि कालों की प्रगति में इतिहास एक सेतु बन सकता है।

आर्टूरो के परिचितों की सूची में हारलम पुनर्जागरण की मशहूर हस्तियाँ शामिल थीं। शॉमबुर्ग को युवा काले लेखकों की अनौपचारिक मंडली की पहली बैठक में आमंत्रित किया गया था। कवि काउंटी कलेन व लैंग्स्टन ह्यू भी इस मंडली के सदस्य थे। उपन्यासकार व कवि जैसी रेडमॉन फॉसेट, जो एनएएसीपी पत्रिका *द क्राइसिस* तथा अफ्रीकी-अमरीकी बाल पत्रिका *द ब्राउनीस बुक* के सम्पादक भी थे, वे भी इस मंडली के सदस्य थे।

इन लेखकों ने आर्ना बॉनटैम्पस, जॉर्जिया डगलस जॉनसन व कलाकार एरॉन डगलस के साथ मिल कर आर्टूरो से आग्रह किया कि वे उन ऐतिहासिक संदर्भों को तलाशें जो रचनात्मक विद्वत्ता के बीजों को सींच सके। शॉमबुर्ग का किताबों का संग्रह उभरते काले गर्व के लिए उपजाऊ भूमि थी जहाँ दुर्लभ खोजों तथा अस्पष्ट तथ्यों को तलाशा जा सकता था। कवि क्लॉड मैकी के अनुसार *आर्टूरो की नाक एक खोजी कुत्ते जैसी थी।* आर्टूरो न केवल छात्रों, कलाकारों व लेखकों को किताबें उधार देते थे, वे उन किताबों के निहातार्थों, उनके बारे में अंतर्दृष्टियों, व कभी-कभार पैसे भी उपलब्ध करवाते थे। आर्टूरो शॉमबुर्ग द्वारा खोजी व संग्रहित किताबों की मदद से उनके मित्र 'कालेपन' का उत्खनन करते और नई पहलें करते।

घर

व्यस्त, हमेशा व्यस्त, फर्नेन्डो ने अपने पिता आर्टूरो शॉमबुर्ग के लिए कहा था। वे हमेशा ही कहीं गए हुए होते। भाषणमाला से जुड़े सफ़रों में, या किताबों के संग्रह के लिए, हर साल तकरीबन आठ महीनों तक। और जब वे ब्रुकलिन में अपने घर होते, वे हर शाम क्लब से जुड़ी या आवास संबंधी बैठकों में व्यस्त होते। जब उनके बच्चे मिलने आते उन्हें पिता के संग्रह की अनन्त किताबों के बीच रहना पड़ता। उनकी इकलौती बेटर डोलोरस उन कलाकारों व विद्वानों का स्वागत करती जो आर्टूरो के लगातार बढ़ते किताबघर को देखने आया करते थे। आर्टूरो की पत्नी एलिज़ाबैथ परिवार के रहने के लिए स्थान तलाशने की समस्या से जूझा करतीं। पर उनकी कोशिशें एक हारा हुआ युद्ध-सी थीं। आर्टूरो की मेज़ की सफाई व्यर्थ थी। जब भी एलिज़ाबैथ उस पर बिखरे कागज़ों को समेटतीं, आर्टूरो शिकायत करते कि उनके महत्वपूर्ण संदर्भ गुम हो गए हैं।

अंततः एलिज़ाबैथ ने घर को व्यवस्थित करने की कोशिशें ही त्याग दीं।

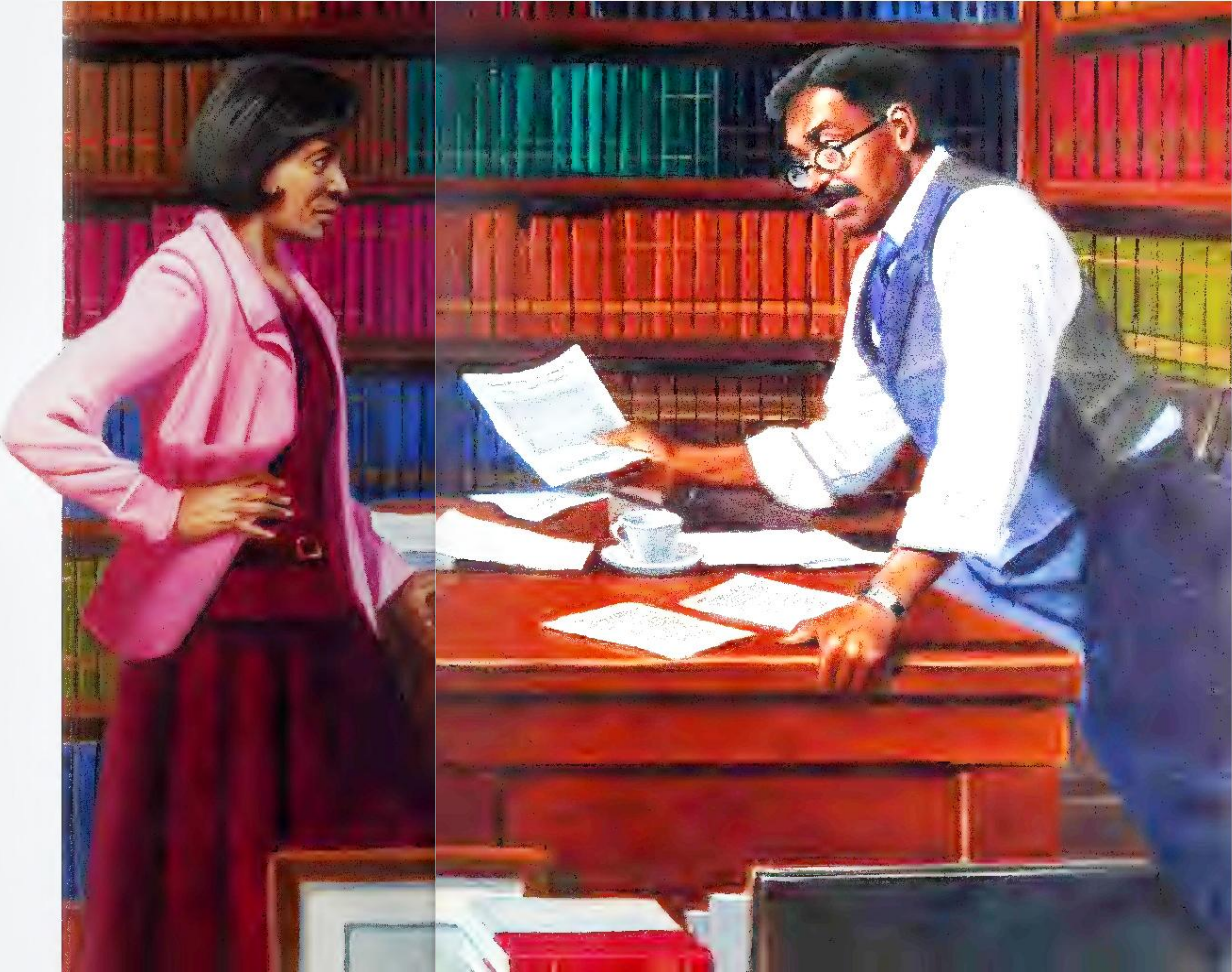

लेखक व शोधकर्ता

आर्टूरो का लक्ष्य विश्व के इतिहास में अफ्रीका स्थान सिद्ध करना था। वे हारलम के मैनस् सन्डे क्लब से जुड़े, जो बाद में नीग्रो सोसायटी फॉर हिस्टॉरिकल सोसायटी में तब्दील हुआ। यह सोसायटी भाषणों व उत्सवों को प्रायोजित करती थी। सोसायटी ने अपने प्रथम वर्ष में तीन सौ किताबें व पांडुलिपियाँ संकलित कीं। आर्टूरो ने अपने घर के अपने संग्रह के अलावा इन्हें भी स्थान दिया।

शॉमबुर्ग अमेरिकन नीग्रो सोसायटी के अध्यक्ष तथा ऑल ब्लैक प्रिंस हॉल ग्रैन्ड मेसोनिक लॉज के महासचिव थे। वे न्यू यॉर्क पब्लिक लाइब्रेरी में एक नीग्रो विभाग खालने के लिए गठित समिति के सदस्य थे। आर्टूरो नागरिक भावना से प्रेरित थे, पर अपने काम के ज़रिए सामाजिक सीढ़ी पर आगे बढ़ने की उनकी कोई मंशा नहीं थी। वे 'रोरिंग ट्वैन्टीज़' की जैज पार्टियों से दूर रहते थे।

आर्टूरो की रुचि लिंडीहॉफ नाचने के बदले इतिहास के पन्ने पलटने में थी।

भाषणों और बैठकों की व्यस्तता के बीच यह जान अचरज ही होता है कि आर्टूरो को शोध व लेखन का समय कैसे मिल पाता था? आर्टूरो अपने आलेख, निबंध व सम्पादकों को पत्र तब लिखते थे जब वे वह जानकारी साझा करना चाहते थे जिसे उन्होंने तलाशा था। ऐसे तथ्य जो अर्से से अंधेरे में रखे गए थे। उन्होंने अठारहवीं शताब्दी के संगीतकार शैवलियर सेंट-जॉर्जस् पर एक शब्दचित्र लिखा। सेंट-जॉर्जस् वह फ्रांसीसी सामन्त थे जिन्हें काला मोत्ज़ार्ट कहा जाता था।
सेंट जार्जस् आर्टूरो के दिल का गीत थे।

आर्टूरो ने ग्लैडिएटरों (तलवारबाज़ योद्धा), सेनापतियों, और कालों की महिमा के बारे में भी लिखा। उनका एक लेख उस विशाल मोती के बारे में था जिसे एक अफ्रीकी गुलाम ने पनामा की खाड़ी में खोज निकाला था। यह मोती हिस्पानी रानियों के पास तब तक रहा, जब तक नेपोलियन का भाई उसे न ले गया। उसने मोती को एक ब्रितानी ड्यूक को बेच दिया। वह मोती बकिंगहम पैलेस और विन्डसर कासल में भी खोया, पर हर बार वापस मिला। इस कारण इस मोती को ल परेग्रिना/द वॉन्डरर (घूमने वाला) नाम दिया गया।

आर्टूरो की शोध उन्हें उस त्रिकोणीय व्यापार मार्ग पर ले गया, ठीक उसी तरह जैसे लहरें और लालच से चीज़ें योरोप से अफ्रीका ले जाई जाती थीं। इसलिए ताकि उनके बदले गुलाम ख़रीदे जा सकें। इन ख़रीदे और बन्दी बनाए गए अफ्रीकियों को अमरीका ले जा कर गुलामों के रूप में बेच दिया जाता था ताकि वे गन्ने की खेती करें। गन्ने के शुद्ध रस से रम बनाई जाती थी, जिसे युरोप में बेचा जाता था।

इतिहास के पन्नों में आर्टूरो को तमाम देशों में बिखरे हुए अफ्रीकी मिले। अफ्रीकी होने का उनका अर्थ राष्ट्रीय सीमाओं में नहीं बंधा था। उनके लिए उनकी अफ्रीकी विरासत कई धागों में बुनी थी।

आर्टूरो का सबसे महत्वपूर्ण आलेख सर्वे ग्राफिक के लिए लिखा गया था, *द नीग्रो डिग्स अप हिज़ पास्ट*। इसे पत्रिका के *हारलम मैका ऑफ द न्यू नीग्रो* नामक विशेषांक में छापा गया था,। अनुक्रम पृष्ठ पर आर्टूरो का नाम मशहूर विद्वानों व प्रतिभाशाली रचनाकारों के साथ छपा था। शॉमबुर्ग के शब्द उनके पूर्वजों को आवाज़ देते लगे। उनका रंग मानो आर्टूरो की कलम से बह निकला था।

बिका

अफवाह यह है कि शॉमबुर्ग की पत्नी अंततः अड़ गईं। उन्होंने कहा या तो घर में किताबें रहेंगीं या परिवार। केवल इस तरह की धमकी ही शॉमबुर्ग को अपने ख़ज़ाने से जुदा कर सकती थी। उनके घर में हर, जगह बने आलों में उनकी किताबें थीं , परिवार के एक सदस्य ने बताया, "*गुसलखाने तक में*। आर्टूरो के दिमाग में उन सबका सावधानी से कैटलॉग बना हुआ था, और उन किताबों के बारे में सूचना भी दर्ज थी। आलों में किताबें आकार और रंग के अनुसार व्यवस्थित की गई थीं। पर आर्टूरो का किताबघर किसी निजी पुस्तकालय से कहीं बड़ा हो चुका था। वे अपना संग्रह ख़रीदने के एक प्रस्ताव को ठुकरा चुके थे, क्योंकि वे चाहते थे कि उनकी किताबें एक अधिक बड़े पाठक वर्ग को उपलब्ध हो सकें। वे अपने संग्रह की अनेक वस्तुओं को किताबघरों व स्कूलों में आयोजित प्रदर्शनियों के लिए उपलब्ध करवा चुके थे।

उन्होंने न्यू यॉर्क के सार्वजनिक पुस्तकालय से बात की। पर पुस्तकालय के पास इतना बड़ा संग्रह ख़रीदने के लिए पैसा नहीं था। सो कारनेगी कार्पोरेशन ने 1926 में शॉमबुर्ग का पूरा संग्रह 10,000 डॉलर में ख़रीदा और उसे न्यू यॉर्क के सार्वजनिक किताबघर को दान कर दिया।

अगर हारलम अफ्रीकी-अमरीकी संस्कृति का दिल था, तो न्यू यॉर्क की 135वीं स्ट्रीट में स्थित सार्वजनिक पुस्तकालय की शाखा उसका दिमाग था। अगर यह किताबघर कोई विश्वविद्यालय होता तो उसके पूर्व छात्रों में हारलम पुनर्जागरण की तमाम हस्तियाँ शामिल होतीं, जो कभी किताबों के आलों के बीच खो जाते थे या नीचे बने शान्त कमरों में बैठे लिखा करते थे। शॉमबुर्ग का संकलन, जिसे एक अख़बार ने *अतुलनीय कहा* था, किताबघर की तीसरी मंज़िल पर था और बाद में पुस्तकालय में बने नीग्रो इतिहास, साहित्य तथा प्रिंटों के विभाग की आधारशिला बना।

इस संकलन में पाँच हज़ार से अधिक किताबें, कई हज़ार पर्चे (पैम्फलेट) साथ ही अमूल्य प्रिंट आदि शामिल थे। इसमें फिलिस व्हीटली का, जो एक गुलाम बालिका थीं, उनके दस्तख़त समेत प्रथम प्रकाशन था, पॉल लॉरेन्स डेनबर की हस्तलिखित कविताएं थीं, जनरल टुसां लुवरट्यूर के पत्र थे, गुलाम से राज नेता बने फ्रैडरिक डगलस के भाषण थे। बैंजमिन बैनेकर का अमरीका का आरंभिक एलामैंक (पंचांग) था और 1573 के हिस्पानी कवि हुआन लैटिनो की कविताओं की प्रति थी, जो किसी काले व्यक्ति द्वारा लिखा गई पहली प्रकाशित किताब थी।

फिस्क विश्वविद्यालय

आर्टूरो शॉमबुर्ग ने अतीत का अध्ययन किया ज़रूर, पर वे वहीं अटके नहीं रहे। उनका लक्ष्य भविष्य उन्मुख था।

मुझे फक्र है, शॉमबुर्ग ने कहा, कि *मैं कुछ ऐसा कर सका जो मेरे नस्ल के युवाओं को प्रेरणा दे सके।*

एक दशक तक सरदर्द और नकसीर (नाक से खून बहना) के बाद आर्टूरो ने 1929 में, बैंकर्स ट्रस्ट से सेवा निवृत्ति ले ली। पर उन्होंने आराम नहीं किया, बल्की लिखने और शोध करने व 135वीं स्ट्रीट के पुस्तकालय में अपने संग्रह की देखभाल करने में और ज़्यादा समय बिताने लगे।

पुस्तक प्रेमी के रूप में अपनी ख्याति के चलते आर्टूरो को 1931 में नैशविल आमंत्रित किया गया, ताकि वे फिस्क विश्वविद्यालय के नीग्रो संग्रह की स्थापना करें। 1932 तक उन्होंने वहाँ 4,000 ग्रंथों का संकलन कर डाला। इस संग्रह के केन्द्र में थी लिंकन की बाइबल। जब आर्टूरो ने उसे हाथ में थामा था, उन्होंने बाल्टीमोर के उन मुक्त किए गए कालों के बारे में सोचा, जिन्होंने बाइबल की यह प्रति लिंकन को भेंट की थी। यह बाइबल एक बेशकीमती खज़ाना था। पर आर्टूरो नहीं चाहते थे कि इसे काँच के पीछे सुरक्षित रखा जाए। वे चाहते थे कि उनके शोध छात्रों की पहुँच उस तक हो।

वे चाहते थे कि प्रोफेसर ऐसे पढ़ाएं/सिखाएंः ताकि नीग्रो नस्ल का इतिहास, सभ्यता के आरंभ से ले कर वर्तमान तक शामिल हो सके। केवल तब ही युवा काले छात्र अपना सिर सगर्व ऊँचा रख सकेंगे, और खुद को सभी के समान मान सकेंगे।

डॉक्टर

टैनेसी स्थित फिस्क विश्वविद्यालय में कुछ साल बिताने के बाद आर्टरो शॉमबुर्ग न्यू यॉर्क वापस लौटे। तब वे 135वीं स्ट्रीट स्थित सार्वजनिक किताबघर में अपने संग्रह के संरक्षक बने। उनका ख़ज़ाना ही नीग्रो इतिहास, साहित्य व प्रिंटस् के संग्रह का केन्द्र था।

किताबों को ताक में रखने का उनका तरीका विचित्र था। वे उन्हें उनके आकार और रंग के अनुसार रखते थे, मानो वे फूलों का गुलदस्ता हों। एक बार एक नये कार्मिक ने ड्यूई डेसिमल सिस्टम के हिसाब से उन्हें जंचा दिया। आर्टूरो ने उसे बर्खास्त कर दिया।

जिन ऐतिहासिक शख्सियतों को उन्होंने खोज निकाला था, वे मानो शॉमबुर्ग से बात करते थे। वे कहते, *हमारी कहानियाँ सुनाओ, हमारी महिमा का उद्घोष करो।*

पुस्तकालय की तीसरी मंज़िल पर बैठ आर्टूरो शोधकर्ताओं का मार्गदर्शन करते थे। दोपहर की चाय के वक़्त वे भाषण देते थे और अपना ही धन खर्च कर संग्रह को बढ़ाते भी थे। उनके द्वारा पुस्तकालय को दी गई भेटों में अफ्रीकी वीनस व सईद अबदुल्ला की कांसे की प्रतिमाएं थीं, जिन्हें एक फ्रांसीसी मूर्तिकार चार्ल्स हैनरी कोर्डिएर ने बनाया था। पेरिस के लूव्र संग्रहालय में 1860 में प्रदर्शित इन मूर्तियों को महज 50 डॉलर में ख़रीदा गया था। आर्टूरो धनवान नहीं थे। पर उन्होंने अपने संग्रह को जिस कीमत पर बेचा था, उसी राशि का उपयोग कर वे उसमें नई सामग्री जोड़ते जाते थे।

जब भी कोई वस्तु उनके बजट से ऊपर होती वे अपने दोस्तों से मदद मांगने में झिझकते नहीं थे। उन्होंने अन्य पुस्तक संग्रहकर्ताओं से कहा कि वे शेक्सपियर के किरदार ओथेलो के, जो उत्तरी अफ्रीका के प्रदेश का सेनापति था, संगमरमर से बने बुत को ख़रीद कर पुस्तकालय को भेंट करें। आर्टूरो ने रूसी साहित्यकार एलैक्ज़ैण्डर पुश्किन तथा अश्वेत अभिनेत्री इरा एल्डरिज की प्रदर्शनियाँ भी आयोजित कीं।

आर्टूरो *आर्मस्टर्डैम न्यूज* नामक अखबार में एक स्तंभ लिखते थे जिसका नाम था *आवर पायोनियर्स* । यह स्तंभ समूचे हारलम में पढ़ा जाता था। किताबघर के कार्मिक उन्हें "डॉक्टर शॉमबुर्ग" बुलाते थे। इस घरेलू इतिहासकार ने यह उपाधि सचमें कमाई थी।

कला

एचिंग (उकेर कर बनाई गई कलाकृतियाँ), चित्रों और मूर्तियों में आर्टूरो शॉमबुर्ग केवल कला ही नहीं तलाशते थे। उनके लिए ये अफ्रीका के वंशजों की प्रतिभा और उनकी उपलब्धियों का दृश्य प्रमाण प्रस्तुत करने का अवसर हुआ करती थीं।

वे मानते थे कि कालों के बारे में प्रचारित झूठों का ये खंडन कर सकेंगी। आर्टूरो उन कलाकृतियों की ओर आकर्षित होते थे, जो कालों को प्रस्तुत करती थीं। फिर चाहे उसके रचनाकार का रंग चाहे कुछ भी क्यों न हो।

वे काले कलाकारों की कृतियों की ओर भी आकर्षित होते थे, फिर चाहे उन्होंने कोई भी विषय क्यों न चुना हो। चाहे वे एरॉन डगलस तथा लुईस माइलो जैसे हारलम पुनर्जागरण के चित्रकारों के चित्र हों, या चार्ल्स हैनरी कार्टिएर जैसे मूर्तिकार हों या सबैस्चियन गोमेज़ और हुआन दे परेजा जैसे हिस्पानी बारोक चित्रकार हों। आर्टूरो ने सभी को अपनाया और उन्हें उसी जुनून और दृढ़ता के साथ तलाशा जिससे वे अपनी किताबें तलाशते थे।

उन्हें लगता था कि कला शायद उन लोगों तक भी पहुँचे जो कभी किसी दुर्लभ किताब को नहीं पढ़ेंगे।

स्पेन

आर्टूरो शॉमबुर्ग ने हारलम के प्रबुद्ध लोगों का आदर-सम्मान पाया। पर उन्हें अब भी अपनी जड़ों की तलाश थी - अफ्रीकी, हिस्पानी तथा ताहिनी इन्डियन्स् (अमरीका के मूल निवासी) की, करेबियन से युरोप और तब अफ्रीका तक। सो उन्होंने अटलान्टिक महासागर को पार किया, कुछ इकट्ठा करने नहीं, बल्की बिन्दुओं को जोड़ने के खातिर।

अब मैं निकलता हूँ, उन्होंने कहा, *एक प्यार के अभियान में। अपनी खो चुकी विरासत को वापस पाने।* उन्होंने वहाँ किताबघरों, अजायबघरों, दुर्लभ किताबों की दुकानों को छाना, ताकि वे गुलामी को स्पेन से जोड़ने वाली कड़ी तलाश सकें।

उन्होंने अफ्रीकी हाथों द्वारा चित्रित उत्कृष्ट कृतियों को देखा। उन महलों और मस्जिदों को देखा जिनका निर्माण अरब व अफ्रीकी मुसलमानों ने तब किया था, जब वे स्पेन पर आठ सौ बरसों तक राज करते रहे थे। ये दृश्य और चित्रफलक (कैनवास) शॉमबुर्ग के दिमाग में दर्ज हो गए। पर स्पेन, फ्रांस, जर्मनी और इंगलैण्ड की यात्रा कर चुकने के बाद भी उन्हें अपने सारे सवालों के जवाब नहीं मिले। फिर भी साथ ले जाने के लिए वे पर्याप्त तथ्य जमा कर सके। यह शॉमबुर्ग की एकमात्र युरोप यात्रा थी, जिसमें इतनी दूर तक गए थे।

इतिहास को सुधारने के लिए कोई भी दूरी उनकी लिए बहुत दूर नहीं थी।

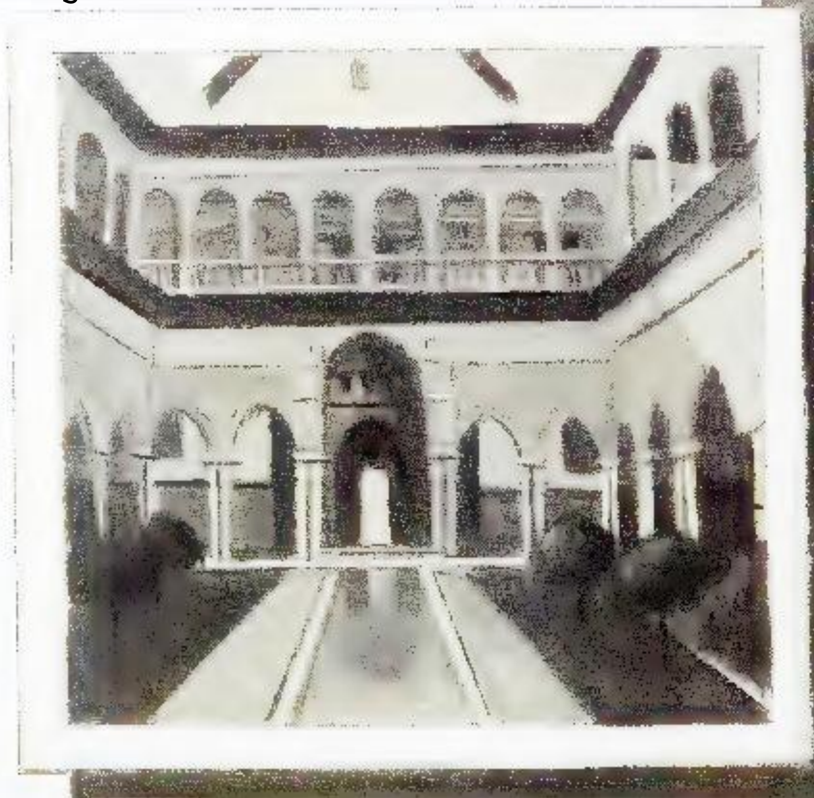

आर्टूरो अल्फांसो शॉमबुर्ग को अफ्रीकी-अमरीकियों और उनके बराबरी पाने के उद्देश्य के साथ जुड़ाव का अनुभव हुआ होगा, उन्होंने उनमें खुद्दारी जगाई होगी, उन्होंने अपने नाम आर्टूरो के अंग्रेज़ी रूप आर्थर को स्वीकारा होगा, और अपने बच्चों से अपनी मातृभाषा हिस्पानी के बदले सिर्फ अंग्रेज़ी में बोलने का आग्रह किया होगा। इस के बावजूद कैरेबियन द्वीपों तथा अपनी जन्मभूमि पोएर्तो रीको के लिए उनका प्यार कभी क्षीण नहीं हुआ।

उनका शोध कार्य उन्हें फिर से कैरेबियन तथा लैटिन अमरीका ले गयाः हाइती, डॉमिनिकन रिपब्लिक, पनामा तथा क्यूबा ले गया।

आर्टूरो हवाना तथा हारलम के प्रतिभाशाली लेखकों के बीच सेतु बने। 1932 में उनकी मुलाक़ात क्यूबा के कवि निकोलस गीयन तथा लेखकों, कलाकारों व विद्वानों के समूह एटेनास से हुई। यह समूह क्यूबा के समृद्ध व रंग-बिरंगी सांस्कृतिक विरासत का जश्न मनाता था। आर्टूरो का अधिकांश लेखन कैरेबियन तथा स्पेन पर केन्द्रित रहेः उनका पहला आलेख हेशियन क्रान्ति व आज़ादी पर था। हारलम में 135वीं स्ट्रीट में स्थित सार्वजनिक किताबघर में उन्होंने क्यूबा के लोक-साहित्य तथा साहित्य पर प्रदर्शनियाँ आयोजित की थीं।

पर इस उत्कट प्रेम के बावजूद आर्टूरो 1909 के बाद कभी पोएर्तो रीको नहीं गए।

स्मारक

1938

अगर यह कहावतः
एक किताब जेब में धर कर ले जा सकने वाले बागीचे के समान है,
सच है, तो आर्टूरो अल्फांसो शॉमबुर्ग
के अंगूठे हरे थे, और उनकी पैदावार फक्र करने योग्य थी।
मानवीय प्रयास का कोई भी क्षेत्र ऐसा न था
जिसे उन्होंने अपने सुदृढ़ हाथों से जोता न हो,
जिसमें उन्होंने जिज्ञासा के बीज बोए न हों,
जहाँ से उन्होंने झूठ और अर्ध-सत्यों की खरपतवार उखाड़ी न हो,
जिसे उन्होंने अफ्रीकी जागरूकता और विरासत के भाव से सींचा न हो।
अगर एक किताब एक बागान है, जिसे जेब में लिए चला जा सकता है,
तो शॉमबुर्ग ने भरपूर फसल पाई
उन्होंने किलिमिंजारो पर्वत को बैंगनी अफ्रीकी फूलों से ढ़क दिया।

समय-रेखा

1874 जनवरी 24: आर्टूरो अलफांसो शॉमबुर्ग का सान्तुर्से, पोएर्तो रीको में जन्म हुआ।

1891 अप्रेल 17: शॉमबुर्ग न्यू यॉर्क पहुँचे।

1892 अप्रेल 3: शॉमबुर्ग लोस दोस एन्तिलास के सह-संस्थापक बने। यह करैबियन आज़ादी का संगठन था। वे इसके सचिव बने।

शॉमबुर्ग राजमिस्त्री के रूप में काम करने लगे, और एल सोल दे क्यूबा लॉज से जुड़े, जिसे बाद में प्रिंस हॉल लॉज संख्या 38 कहा जाने लगा।

1895 जून 30: शॉमबुर्ग ने एलिज़ाबैथ हैचर से शादी की। विवाह से उनके तीन बेटे हुए - मैक्सिमो गोमेज़, आर्थर अल्फान्सो जूनियर और किंग्सले गुआरिओनेक्स।

1896 शॉमबुर्ग ने न्यू यॉर्क में हिस्पनी भाषा पढ़ाना शुरु किया।

1900 एलिज़ाबैथ हैचर शॉमबुर्ग की मृत्यु हो गई।

1901 मार्च 17: शॉमबुर्ग ने एलिज़ाबैथ मोरो टेयलर से विवाह किया। कालान्तर में उनके दो बेटे हुए - रेगिनाल्ड स्टैनफील्ड और नैथेनियल होसे।

1904 अगस्तः यूनीक एडवरटाइज़र में शॉमबुर्ग का लेख, *इज़ हाइती डेकाडेन्ट?* छपा।

1905 जनवरी 14: हारलम में न्यू यॉर्क सार्वजनिक पुस्तकालय की एक शाखा 135वीं स्ट्रीट में आरंभ की गई।

1906 शॉमबुर्ग ने बैंकर्स ट्रस्ट कम्पनी के डाक कक्ष में काम करना शुरु किया। कुछ समय बाद उन्हें सुपरवाइज़र के पद पर पदोन्नत किया गया।

1911 अप्रेल 9: शॉमबुर्ग ने एडवर्ड ब्रूस तथा अन्य लोगों के साथ मिल कर *नीग्रो सोसायटी फॉर हिस्टॉरिकल रीसर्च* की स्थापना की।

1912 शॉमबुर्ग ने *एन्स्लाइक्लोपीडिया ऑफ द कलर्ड रेस* का सह-सम्पादन किया।

1914 एलिज़ाबैथ टेयलर की मृत्यु के बाद शॉमबुर्ग ने एलिज़ाबैथ ग्रीन से शादी की। उनके साथ शॉमबुर्ग के तीन बच्चे हुए - फर्नैन्डो, डोलोरस मारी, व प्लासीडो कार्लोस्।

1918 शॉमबुर्ग को प्रिंस हॉल ग्रैंड मेसॉनिक लॉज न्यू यॉर्क का महा-सचिव चुना गया।

हारलम पुनर्जागरण का आरंभ हुआ, जो सांस्कृतिक, सामाजिक व कलाकृतियों का विस्फोट था।

1920 दिसम्बर 30: शॉमबुर्ग ने नीग्रो अकादमी की अध्यक्षता संभाली।

1925 मार्चः शॉमबुर्ग का आलेख *द नीग्रो डिग्स अप हिज़ पास्ट* सर्वे ग्राफिक के विशेषांक में छपा।

1926 जूनः द कार्नेगी कार्पोरेशन ने शॉमबुर्ग के संग्रह को 10,000 डॉलर में ख़रीदा और उसे न्यू यॉर्क सार्वजनिक पुस्तकालय के नीग्रो इतिहास, साहित्य तथा प्रिन्टस् विभाग को दान किया।

जून-अगस्तः शॉमबुर्ग ने फ्रांस, स्पेन, जर्मनी तथा इंग्लैण्ड की यात्राएं कीं।

1927 जनवरी 20: 135वीं स्ट्रीट, न्यू यॉर्क की सार्वजनिक पुस्तकालय शाखा का नीग्रो इतिहास, साहित्य व प्रिंटस् विभाग जनता के लिए खोला गया।

1930 जनवरी 1: शॉमबुर्ग ने बैंकर्स ट्रस्ट कम्पनी से सेवा निवृत्ति ली।

1931 शॉमबुर्ग ने फिस्क विश्वविद्यालय के नीग्रो संग्रह के संग्राध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाएं दीं।

1932 क्यूबा की यात्रा के दौरान शॉमबुर्ग ने क्यूबा के कलाकारों तथा लेखकों से मुलाक़ात की, और उनसे न्यू यॉर्क के सार्वजनिक पुस्तकालय के नीग्रो इतिहास, साहित्य व प्रिंटस् विभाग के लिए सामग्रियाँ प्राप्त कीं।

1932-1938 शॉमबुर्ग ने न्यू यॉर्क सार्वजनिक पुस्तकालय के नीग्रो इतिहास, साहित्य व प्रिंटस् विभाग के संग्रहाध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाएं दीं।

1938 जून 8: शॉमबुर्ग का ब्रुकलिन, न्यू यॉर्क में देहान्त हुआ।

1940 अक्तूबरः शॉमबुर्ग संकलन को न्यू यॉर्क सार्वजनिक पुस्तकालय के इतिहास, साहित्य व प्रिंटस् विभाग का नाम बदल कर नीग्रो इतिहास, साहित्य व प्रिंटस् का शॉमबुर्ग संग्रह कर दिया गया।

1972 मईः अक्तूबरः न्यू यॉर्क सार्वजनिक पुस्तकालय के नीग्रो इतिहास, साहित्य व प्रिंटस् विभाग को शोध पुस्तकालय नामित किया गया और उसे *शॉमबुर्ग सेंटर फॉर रीसर्च इन ब्लैक कल्चर* का नाम दिया गया।

1980 सितम्बरः *हारलम के* 515 मैक्सिम बुलावार्ड में शॉमबुर्ग सेंटर का नया भवन खुला।